

श्री काशी का चरन दोस
वि. वि.

श्री काशी का चरन दोस

1.259

SHI ARCHIVES

ॐ नमः श्रीमन्मन्त्रालये
॥ कालाग्निः स्वल्प
विधिलिख्यते ॥ कालि
तनुस्तुत्यायाः (थं) यूनध
वदजायया कमल्यास्व
न आरुतिविययाग वा
वृकाथधुलिर्नगक ॥
दावसश्रुदिकरुहास्यं क
सुचतुष्टसुगन्धश्च वदाव
श्रुतिरुक्कयादाव लयन
याथ ॥ (थ) सिन्धुत कालि
चक्राय ॥ ॥ थ वन
श्रासन नवचर्म यावु
चर्म कर्माङ्गित वक्रच
र्म विविगकम्बनादि ध
मश्रासन रुद ॥ ॥ वृथः
शङ्कनयाचक ॥ तगाक
वसार्चन ॥ श्रादिमार्तः
वृजा ॥ शुवनमकाव श्रुः

त्वं भुमं भुलाकारं व्यादि ॥
 न्यास ॥ ॐ हूं स ४ भू काय
 रुद्र ॥ कवशाधनं ॥ ॐ हूं
 स ४ कनिष्ठकाय नमः ॥
 ॐ हूं स ४ भू नाभिकाय स्वा
 हा ॥ ॐ हूं स ४ मध्यमाय वी
 षट् ॥ ॐ हूं स ४ मूर्धन्याय
 ह्रीं ॥ ॐ हूं स ४ भू दुष्टकाय
 वषट् ॥ ॐ हूं स ४ भू काय
 रुद्र ॥ ॐ गिक वन्यास ॥ ॥
 ॐ भू न्यास ॥ ॐ श्री ग
 नाय उर्ध्ववक्त्राय नमः ॥
 ॐ तल्लक्ष्म्याय उर्ध्ववक्त्राय
 नमः ॥ ॐ अधोवाय दक्षि
 णवक्त्राय नमः ॥ ॐ वा म
 दवाय उरुवक्त्राय नमः ॥
 ॐ सधाजाताय यक्षि नव
 काय नमः ॥ ॐ श्री गाना
 य उर्ध्ववक्त्राय नमः ॥ ॐ

ति वरुणाय नमः ॥ ॥ तमा
 अर्घ्याय नमः ॥ अर्घ्या
 गायत्र्या नमः ॥ ॐ नमः
 हृदयाय नमः ॥ ॐ नमः
 ॐ नमः ॥ आवाक्यं धनमू
 षा ॥ आत्मनसि नमः ॥
 आत्मनो वन्दनं नमः ॥ आ
 त्मसि नमिष्ये नमः ॥ आ
 त्मसनाय नमः ॥ आत्ममू
 र्त्तये नमः ॥ कृष्णाय नमः
 नमः ॥ हृदये नमः ॥ ॐ नमः
 आत्मयुजा ॥ ॥ तमाक
 लसाधने ॥ ॐ नमः ॥ आ
 ध्याने नमः ॥ ॐ नमः
 ॥ ॐ नमः ॥ हृदयाय नमः
 ॥ ध्यान ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः
 कर्तृकार्तृणि नमः ॥
 विह्वलवन्दारय रुरुध्वजः
 मृदामालाशयं हर्ष ॥ ॐ नमः

वा मलादर्व सर्वकामरुल्य
 दौ ॥ ब्रूणिश्चान ॥ **ॐ सं** ॥ ४
 स ॥ ३ याय भूमुगीधवाय
 मंहालश्रिगदिसदिताय ॥
ॐ सं ॥ ४ याइका ॥ **ॐ सं** ॥ ४
 गमादिसकस मूदथानम
 ॥ **ॐ सं** ॥ ४ कावादिसक
 सागनथानम ॥ **ॐ सं** ॥
 ४ ब्रूवादिदमलाकपालः
 थानम ॥ ३ भूभूमादि
 भूस्ववित्रि विथानम ॥
 ॥ ३ यनियदादिनिधिथा
 नम ॥ ३ भूभुन्यादिभूस्व
 विभगितनकथथानम ॥ ३
 विक्रहादिसकाविभगितन
 कथथानम ॥ ३ मयादिः
 द्वादमनागिथानम ॥ ३
 मूदरुथानम ॥ ३ वनि
 हादिसकस विथानम ॥
 ३ भूनकादिभूस्वकलना

॥ ब्रूवादिदमलाकपालः ॥

गवाजथानम ॥ ३ भाका
 दि - कवायनम ॥ ३
 प्रीकथायनम ॥ ३ भक
 वायनम ॥ ३ भूनकाय
 नम ॥ ३ सादाकायनम ॥
 ॥ ३ विंगलायनम ॥ ३ भू
 गितायनम ॥ ३ एकमादा
 यनम ॥ ३ ब्रूवादिनम ॥
 ॥ ३ विक्रयनम ॥ ३ ब्रू
 वायनम ॥ ३ सदामिवा
 यनम ॥ ३ ब्रूवायनम
 ॥ ३ स्यूधुकलसमूह
 य ॥ ३ भू कलवमहास
 नसकल - समीहनगीथ
 मरुदव - माकलागवा
 धिकयवक्रविभूत्रजलम
 लविशानिवतबोधिकय
 भू भू भू श्रीस्यूधुकलस
 भू भू भू मूहयायाइका ॥
 भू भू भू लिख ॥ ४ ॥

वलि ॥ धातुगद्ग्रीनलि
ध ॥ **ह्रीं व नू लु द धे ह्रीं वं**
व नू लु कालिकायै नमः ॥
लिध ॥ श्रीय नमः ॥ ललि
य नमः ॥ आवाक ॥ धन
शानि मूडा ॥ जाय ॥ **ऊँ ह्रीं स**
४ खारो १० ॥ ललि ॥ वलाव
धीसकलतीर्थजलनयूषा
स्वकणयलव रितलितयूषा
माला ॥ ऊँ ह्रीं मूडा विषय
मूतिरिषसका **ह्रीं ह्रीं**
मूर्तिरुतनमा मि ॥ ललि
धर्चन ॥ **लूगिकसतयूजा**
॥ ॥ ललुजावनयूजन ॥
मूगसतय नमः ॥ **लूगं गंगी**
मूगं ४ (लूगं) श्रीकलग (लूगं) वा
यथा इका ॥ लिध ॥ वलि ॥
(ग) यामयूजन ॥ **ऊँ ह्रीं न**
दायै नमः ॥ **ऊँ ह्रीं रुडायै**
नमः ॥ **ऊँ ह्रीं लुगिलायै**

नमः ॥ **ऊँ ह्रीं स म त सा ये न**
मः ॥ **ऊँ ह्रीं स म त सा ये न**
नमः ॥ **ऊँ ह्रीं य ध ३ (ग) मा**
रुकाय नमः ॥ आवाक ॥
धन मूडा ॥ जय ॥ ललि ॥
तमा कामा निरुजाय जन ॥
वक्रायादि ॥ **कांकां ह्रीं**
कांकां ४ वृं कामा वी द धे या
इकां ॥ **लूगं** लिध ॥ वलि ॥ आ
वाक ॥ **मूडा** जाय १० ॥
ललि ॥ वालरावयादि ॥
॥ ॥ तमाथान वलि यूजन
न्यास ॥ रुकाव ॥ यूजन ॥
लिधव ॥ वक्रायादि ॥ **(ग) थ**
ययाकल **डाथा ययान** लि
याकलति ॥ **मूडा** वलि ॥
कणन **गियाकलति** **मूडा**
वलि ॥ **कांकां** मूकाथरुट
खारो ॥ मूरुनी खारो ॥ **सर्व**
टक खारो ॥ **गानि वलि गूक**

२ साहा ॥ वृज्वी साहा ॥ म
 भनवासिनी साहा ॥ श्वः
 वी साहा ॥ ॐ सथा गिनी सा
 हा ॥ ॐ स रं व वा य साहा
 ॥ विकटा धवी साहा ॥ ल
 म्बकर्मणी साहा ॥ ॐ को
 ल जी स ॐ को ल जी स
 था गिरी सा वलि गृह २ सा
 हा ॥ सा क म हा वलि ॥
 आ वा क ॥ म डा ॥ धू य दी
 य ॥ जा य ॥ कृ ण न १० ॥
 सा य ॥ पूर्व दक्षिण य प्रि
 मा रु न ॥ मूर्वा धि मा ला सि
 का ॥ कृ ण सी व ट रु ता इ न रु
 न धी रु न म्ब ता था य च । म म
 न य न ता धि द व क रु लि ४ सा
 का वि पू य हा ॥ नि यान न्द म
 ह्मि य मा दि त स दा वा ल्या दि
 पू जा वि धि ॥ अ गु न आ दि
 वा क्य न स रु ॥ त र्थ न ॥ ॐ

भन वलि पूजा विधि ॥ ॥

ॐ नमः ४ का न य ॥ त मा मूः
 मि कार्थ का न य त ॥ गित व
 ता च म्ब ॥ य य रा ज न ॥ ॐ
 य न म मि व म कि श्री श्री म म
 म यान य य रि म धी मु व या
 दा म्ब जी प्र ध ता मि ॥ हा जान
 यी जा य ॥ ॐ ॐ ॐ वृ थान म
 ४ ॐ त्या दि मु व न म क्ता व ॥
 ॐ मि मु व न म क्ता व ॥ ॥
 ॐ ॐ गंग ध य त य न म ४
 ॥ वाम वा रु ॥ ॐ ॐ ॐ क
 ए या ला य न म ४ ॥ द द वा रु
 ॥ ॐ ॐ ॐ यां था गिनी थान
 म ४ ॥ वाम जानू ॥ ॐ ॐ ॐ
 स व स य न म ४ ॥ द द जानू
 ॥ ॐ ॐ ॐ यं य न मा ल न न म ४
 ॥ उ मी रु द द य न म क्ता व
 क्ता ॥ य य क्ता न ॐ व

नमस्कारं कृत्वा ॥ अथ धु
 मधुलाकारं न्यादि ॥ ॐ
 त्रिभुवनमस्कात्र ॥ ॥
 गतामूलनयास ॥ अथ न
 दिगंधर्त १० ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
 वायुयाकारं ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
 अग्नियाकारं ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
 जवयाकारं ॥ ॥ अथा
 दिमासनक्षत्र वासनस
 रु यथा कामनया श्री श्री श्री
 उक्त कालिप्रियर्थ श्रीरूः
 ययि अर्धमि म ४ ॥ ॥ ॐ
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महा मारुत
 कालिकाय सूर्य मधुला क
 र्त्ताय श्री सूर्य वर्य साद्या
 कया दयुन म ४ स्मारा ॥ ॐ
 निमार्तु धूजा ॥ ॥
 ॐ ॐ श्री उक्त कालिप्रिये
 मायिका म माकाय श्री ३
 वृद्धवदवताय यथाका

मतया कालानियममहं
 कलिस्था ॥ ॐ तिसंकल्प ॥
 ॥ ॥ जलाक्षतनकुमासव
 र्त्ता ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 ताऊरुगाविसंस्त्रिगाऊ
 तुगाविचिकरुर्नितनसः
 रुसिवाख्या ॥ कवता न
 वर्य ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 नाय अक्याय ॥ मूलैर्भुन
 दिगंधर्त ॥ ॥ दिगुजा ॥
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 यथा नम ४ ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 मादिरेव वायु नम ४ ॥ ॐ ॐ
 अकं वदेतं यं यं गं वं मादि
 अकमारु कं स्थानम ४ ॥ ॐ
 तिदमदिगर्त अकमारु नथ
 मादिगवंधयाय न्व ॥ ॥
 मूलमनुमनर्दीवान १० ॥
 सिनसिजयत ॥ ॥ हगव
 निविथ ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

४ सर्वविघ्नहाराय ४ वसिष्ठ
 कृ २ निर्विघ्नं कुरु २ वावा ॥ ॐ
 द्यौं क्रौं कण्ठ्या लाय वसिष्ठ क
 वृ २ मां वक्र २ कं कं रुद्र ॥
 २ वसिष्ठ वसिष्ठ वसिष्ठ ॥
 ॥ ॥ धवक आसन पूजा ॥
 कं कं कं आ ४ नमो कितं का वि
 सति मधुसूत मरुते नवकुं
 मिवा सनथी याद ॥ ॐ कं लं
 वृ लका ला सनाय पूर्वयश्च
 करु रुद्रं रुद्रं रुद्रं याद ॥ ॐ
 कं सुरुमुदलय आसनाय या
 द ॥ वृ नि आसन पूजा ॥ ॥
 वावा या म ॥ ॐ कं कं कं कं
 ॥ वाव २ १ की रुद्र कं वावा
 याम ॥ ॥ गम मा रुका न्या
 त ॥ ॥ पून न्या त ॥ ४ ४ मू
 रुद्र रुद्र ॥ वृ त्यादि मरुत
 कन मरुत न्या त ॥ ॥ पून मरु
 त न्या त ॥ ॐ जं सर्वस्मा सर्व

कृतावद्वदयाधनम॥ॐ
 ॐ अमृतमञ्जुमालिनीनिरु
 कितामहमि नमस्तुते ॥ॐ
 ॐ वदवदनिमृतादिवोध
 कालकालनिमित्तायेवोषट्
 ॥ॐॐ वजिनीकडधवायव
 तुरुयिगलकववायव ॥
 ॐ ॐ तजदीयनिमृतायेव
 गुणायवोषट् ॥ॐ ॐ ॐ न
 नागकीशुक्रायव ॥ ॐ ॐ ॐ
 मउक्तन्यास ॥ ॥ तमानव
 त्वन्यास ॥ ॐ यजियागला
 यनम॥ ॐ सुरुदव ॥ ॐ मूरुत
 त्वयनम॥ ललाट ॥ ॐ नी
 तित्वयनम॥ ॐ मध्व ॥ ॐ
 कालतत्त्वयाद ॥ नागप्रा ॥ ॐ
 मायातत्त्वयाद ॥ मूष ॥ ॐ विः
 यातत्त्वयाद ॥ क ॥ ॐ ॐ
 धवतत्त्वयाद ॥ हृदि ॥ ॐ मि
 वतत्त्वयाद ॥ नाश ॥ ॐ सदा

निवतलयाद॥ ति॥ ॐ
निवतलयास॥ ॥ ॐ ॐ
आलगतयाद॥ मूलाक्षर ॥
ॐ ॐ विद्यातलयाद॥ हृदि॥
ॐ ॐ निवतलयाद॥ कथक्
थ॥ ॐ निवतलयास॥ ॥
ॐ ॐ रुटिकारुडुर्ग्रीमानव
कायमाद॥ सरुउदलं॥ ॐ ॐ
तफहाटकसुनिशयपूर्व
काययाद॥ नामाय॥ ॐ ॐ
मंडनाथमूधावदकिधवका
याद॥ दक्षक॥ ॐ ॐ यः
मिमीपूथारुवामदववकु
याद॥ वामक॥ ॐ ॐ व
डावदनयतीकागवर्तुडर
नवकायाद॥ डरुव॥ ॐ नि
यश्चवर्क्यास॥ ॥ मूल
नकायामास॥ वूनधाणम
दकविनास॥ ॥ जलयाण
॥ मूर्धयाणयूजा॥ डरुनम

तन॥ ॥ ॐ मूमावाला
श्वरीविमरुद॥ श्वरीधीम
हीतन॥ ॐ ॐ लिपकादयात्
॥ ॐ मरुन॥ मूर्धयाणडधन
खासादि॥ यरुसिशनसिच
यत्॥ ॐ ॐ तथर्षी॥ ॐ ॐ
दि॥ ॐ ॐ मयूजा॥ ॐ ॐ
यमर्तिकरु॥ ॐ ॐ मरुवव
यिधाला॥ ॐ ॐ निमूमायूजा
॥ ॥ ॐ ॐ मरुसिक्ताव॥
मूनमरुन॥ यश्चवानसम
र्षी॥ ॐ ॐ ललिहामूडादमर्थ
त्॥ ॐ ॐ मरुववउथाग
श्वरीयाद॥ मूलमरुनकृ
य॥ १ ॥ ॐ ॐ वउथागश्वरी
रु॥ ॐ ॐ नानाविनिकवः
वायर्हुरु॥ मूर्धयाणन
याक॥ ॐ ॐ मरु
धानवाम॥ ॐ ॐ मरुकाय
इताउयामि॥ कृगहायून

कृपुदाय ॥ ३ ॥ **ॐ** **ॐ** व
उयागश्वनीयाद**ॐ** नग
यायवीमद ॥ जलयायनध
कर्म ॥ ४ ॥ **ॐ** **ॐ** कमलाय
वामुअयेविब्रह्मदयायन
मः ॥ एयकावकुदिकसहा
न ॥ **ॐ** **ॐ** मयाय ॥ ५ ॥ **ॐ**
ॐ कृपायरुद्रकिविहिरुद्र
उदनामि ॥ कृगनकृपुः
यानाय ॥ ६ ॥ **ॐ** **ॐ** महा
रुद्रवाय हिलि २ कववाय
हृंकृत्यामि ॥ कृगनकृपु
दाय ॥ ७ ॥ **ॐ** **ॐ** महा
यायविब्रह्म ३ पूनयामिन
मः ॥ कृपुयावावादिनवा
दाय ॥ ८ ॥ **ॐ** **ॐ** महा
कववायहृं १० धीहृं स माई
यामि ॥ कृपुमाथरुन ॥ ९ ॥
ॐ **ॐ** कृगनयस १० वृज
कववायहृं १० स १० सयया

मि ॥ कृपु(धलाश्वनय ॥ १०
॥ **ॐ** **ॐ** कृजवेवाचनीयम
हाकलालिहृं रुद्रकजीकव
नी ॥ कृजवाय ॥ **ॐ** **ॐ** ॥ कृम
कृगनयमकृपुगीगरान
य ॥ १० ॥ मूलमरुन कृ
पुस स्वागतं ॥ धमकृपु
एकादम संकानरुला ॥
॥ ॥ लं ॥ जहायन यत्र
नतगा ॥ ददपमरु ॥ ॥
ॐ **ॐ** कृमातलसागकीनः
स्वायेनमः ॥ **ॐ** **ॐ** विद्याग
तनाजसीनस्वायेनमः ॥
ॐ **ॐ** निवतस्वायेतामसीन
स्वायेनमः ॥ ॥ ॥ कृपुय
धस कृगनयस्वादयक ॥
॥ कृमाविष्णु १० १० ज्ञाया
व स्वर्गयिनमरु ॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ**
ॐ **ॐ** **ॐ** कृविष्णुकृपायलि
मृगमूरय कृपुनरु २ ॥

शूणायनमः॥ श्रीनिकान
 सपूलाचकंग॥ ॥
 ॐ ह्रीं स्वाहा शूणायनमः॥
 अर्घ्याय सदा सुखाननं श्री
 वरुणं॥ ॥ ॐ ह्रीं वरुण
 आलम्बनीवीमह॥ नक्रभा
 न्यक्षययामि॥ पूजादिनी
 मनात् स्वानवाहन॥ ॥
 ॐ ह्रीं हृदयार्थनमः॥ कृष्ण
 नयः शूणायनमः॥ ॥ ॐ ह्रीं स
 हार्तकः अथनमः॥ आगत
 विहिहान॥ ॥ ॐ ह्रीं मा
 वागम्बनीविमहृदः प्रमि
 नायननकालियेवायया
 न॥ वृणासनन॥ ॥ तन्ना
 कृष्णपूजनं॥ ॐ ह्रीं हृदय
 यनमः॥ ॐ ह्रीं निवसः
 हा॥ ॐ ह्रीं दिव्यतन्त्रं
 पूज॥ श्रीवाक्त्रयानिमूढा
 धनकृष्णपूजाविधि॥ ॥

हामसिंजजमानककाव॥
 साधनयाथमनु॥ ॐ ह्रीं ह्रीं
 ॐ ह्रीं काशीसाधयामिनमः॥
 ॥ वावः जयवथ॥ कृष्णतथा
 न्याकावतन॥ वातयिमा
 चकंगानमनु॥ ॐ ह्रीं सर्वमनु
 यविमहृकालसंकर्षविधीम
 हतनः॥ सिद्धियेवाययात् ॥
 हृदयमनु॥ हार्तनमः
 वा॥ चन्दनादियूजा॥ श्रीमन्म
 सतपूजा॥ श्रीधनवादि॥ ॐ
 ॐ ह्रीं स्वाहा शूणायनमः॥ ॐ ह्रीं
 ॥ ॐ ह्रीं शूणायनमः॥
 ॥ विद्या॥ निवे॥ ॐ ह्रीं स
 काविमितिमूढासनयनः
 मः॥ कान्तसनयनमः॥
 धनशूणायनपूजाविधि॥

कृष्णसूनीमनवागम्बनी
 पूजनं॥ ॐ ह्रीं स्वस्त्युवाग

श्रीगुरुयक ॥ सूर्यकाकिः
 वाक्पद्मगुरु, बालवनितागु
 लाम्बा ॥ सिमरंघागस, कूस
 नयू, नयाव यिताग, मर्तवा
 हाव ॥ धर्मलिकायाव, जः
 लिमलासगमरु ॥ ॐ हूं हूं
 हूं कथादानिथवाहा ॥
 जयका, लकान, निवर्कत ॥
 ॐ हूं हूं हूं धन ३ ॥ धर्मवृ
 तादगि ॥ निलाकनिधर्मधन ३
 ॥ वलिमरु ॥ लतायविधि
 धिकानाययादि ॥ ॐ हूं हूं
 हूं ॥ कथादानिविस्मर्जन ॥

[illegible]

॥ मूलमकुत स्थायनी ॥ स्वकि
कृष्णसिदा विप्रि त्यादि ॥ मा
सिनि य (० ॥ ॥ अग्नि ससिनि
कागाना ॥ आकाशमकु ॥ द्रव
यन ॥ हृदय यश्च वलिदया
नू ॥ आवाक ॥ मूला नूति ॥ ॥

नूति कृष्णव द्रवस् मूला
दिन ॥ ॥ अग्नि वृजा ॥ ॐ
कौं कौं कयिल यि गलजगः
लान रासु व विनय ग कि प्रकु
रुलाय मया सनाय व क्रि मूल
यनमः ॥ ॥ ॐ कववाय
हू ॥ अव उधनी ॥ ॐ हृदया
यनमः ॥ अर्घ्यया दकनहा
य ॥ ॐ वा (ग श्रवाय नमः ॥
ॐ कौं वा (ग श्रये नमः ॥ ॐ
ॐ वा हा मूला यरुद्र वागी
श्वरी कृष्णन क कनने का विथ
व उर्वदिता ॥ युजन ॥ ॐ अ

(यदसी निधान किलिकायन
मः ॥ ॐ आनयी भयनमः ॥
पूर्व मूला टनी ॥ १ ॥ ॐ
यश्च दसनि धन किलकि
लायनमः ॥ जालीध वयी भ
यनमः ॥ दक्षि (ध मूला यात
नी ॥ २ ॥ ॐ सामवदसी नि
धान किलिकायनमः ॥ वृष्णि
विधि भयनमः ॥ ३ ॥ ॐ
मूला वदसनि धन किल
सिकायनमः ॥ कामवृय
यी भयनमः ॥ उरु व मूला
यातनी ॥ ॐ निव उर्व वृजा ॥

अलास सिधकाग कृष्णयन्त्रि
जगाम विरु सिध जगाम ला
न उक्ता ॥ ॥ यनिताय गुरु
लैव सध ॥ अमलकुत अग्नि
सुधाने धन ॥ ॥ अमलतलैव
धान हाहि रर कृष्णयन्त्रि

नं च लनादिस्तानम ॥ ॥

ब्रह्मा सुदक्षकाय ॥ वाक् ॥

यो न यो न कथं वदित्वादि ॥

यूक्तं ॥ ईसासायनम ॥ ॐ

ऊँ वृक्ष (धनम ॥ ॐ ऊँ वृक्ष

मूर्त्यनम ॥ श्रीवाक् ॥ यम

महा ॥ ॐ तिबुक्कायूजा ॥ ॥

गतायनिग, स्ववामस्वाय ॥

वाक् ॥ अनर्कयूवीकाईः

त्यादि ॥ यूक्तं ॥ गवृक्षसाय

नम ॥ ॐ ऊँ वेष्टवतम ॥

ॐ ऊँ विष्टमूर्त्यनम ॥ श्री

वाक् ॥ धनम ॥ ॐ नियनिग

गतायुक्तयुवासाधनं ॥ ॐ

दू ॥ सल ॥ ॐ नानाययानि ॥

धन ॥ ॐ ऊँ वृक्षयष्टक

नतम ॥ ॐ ऊँ वृक्ष (धन)

सतवायनम ॥ ॐ ऊँ वृक्ष

सतवायनम ॥ ॐ ऊँ वृक्ष

युवावायिथ ॥ ॐ ऊँ वेष्टव

विद्यागवायनम ॥ ॐ ऊँ वेष्टव

(धन युवा म (धिययक ॥

ॐ ऊँ वेष्टव निवतवाय

नम ॥ ॐ ऊँ वेष्टव युवाया

नयिथक ॥ ॐ निमिवाय

वीष्ट, युवा स लैखथंन ॥

स्वाहा श्रीकायष्ट, युवाया

लैखयुसंगधन ॥ ॐ युवा

न श्रीमिष्टयुष्टयक सावा

क, धयुवागवायलैख, य

निगयायसंग, स्वमनश्रुष्ट

गजलववरावय, श्रीमिष्ट

न ॥ ॐ ऊँ वेष्टव युवाया

कलायथ ॥ ॐ मलावयुः

यागधनीश्रुष्टायाद ॥ यः

वयुष्ट, कमारिष्टयनयिन

कववमकुत ॥ वन्दनादि

यूजा ॥ यूक्तं ॥ ॐ ऊँ वृक्ष

निवायनम ॥ ॐ ऊँ वृक्ष

वागकुतम ॥ ॐ ऊँ वृक्ष

कृष्णवासां नमः ॥ मठम् ॥
श्रीवाङ्म ॥ ॐ तिथुवासाधनः

नमाधवकसाधनं ॥ मिस
यानमस्तु ॥ ॐ हूं हूं ॥ ता
ययामिधन ३ ॥ ॐ हूं जि
मित्वायेवोषट् ॥ लंखनवा
ल ॥ ॐ हूं हूं मूलायष्ट ॥
कमनमल ॥ ॐ हूं जिनि
त्वायेवोषट् ॥ धवकसधन
न ॥ ॐ हूं मेरुताविकाय
वोषट् ॥ ताययामिनमः ॥
मयगीतधन ३ ॥ वायुय
काधसधनकनक ॥ ॐ हूं
हूं मलाकववायहूं डाव
यामि ॥ कमनवालावध
कम ॥ मूनिस्तकायकावः
धनगीत ॥ ॐ हूं हूं हूं हूं
महात्रुथा ॥ गन्धवीयाद
॥ वावजजयवध ॥ मूल

मस्तुधन ३ ॥ कमयकि
नगुलिन ॥ घृतरिगगथ
॥ ॐ हूं मूलायष्ट ॥ द
कनय ॥ ॐ हूं सोमोयष्ट
हा ॥ वामनय ॥ ॐ हूं मू
निशामायांखाहा ॥ जितीय
मस्तु ॥ घृतरिगगया ॥ कम
यकि २ वतुवानकायाव
ॐ मस्तुकातसदयमस्तु ॥
ॐ हूं मूनिस्तकायकाव
॥ ॥ जजमान ॥ श्रीधधति
जाययक ॥ वायु ॥ लीनयगा
रुगवा ॥ नृजसमा ॥ कमयय
पूयत ॥ नमामितदहिलि
हूं ॥ वकामयकमागती ॥ श्री
यमूखी ॥ हूं ॥ सुर्वयाठक
नागती ॥ श्रीययायहूं नई
हूं ॥ श्रीययायहूं नई ॥
श्रीयय ॥ सुवग ॥ मस्तु
सर्वमाययिनिष्ठिती ॥ ॐ

गतातक ॥ ॐ नमो
 (प्रहृष्टा ॥ ॐ नमो
 यथाहं ॥ ॐ नमो
 वाह ॥ ॐ नमो
 वाह ॥ ॐ नमो

सूक्तिं कुरु ग्रामस्तलासादि
न्यालभता ॥ वृद्धादि ॥ ॐ
वाँ नूत्राय तमः ॥ ॐ नाश्रु
प्रथमतः ॥ ॐ मूकमाय
तमः ॥ ॐ दूने ज्ञाय तम
॥ ॐ वृन्वृक्षाय तमः ॥
ॐ यै वायुयाय तमः ॥ ॐ

साधकिसि सहि गाय विपन ध्वन लिं गमय नमः वलिः
 ॐ निदिगपुका नमः ॥ कुममहाष्टादशमयोग
 ॐ उगाले कुम कालि कुले पिठानि याजिनी दवलाम
 नुरे पाणि न्या साय कालि काकुमः
 नसादवा न लुत्त पविप निवानपुका ॐ ऊँ रु मल्ल
 नसादानपुका ॐ ऊँ ऊँ आ काला न दानपाले आ पाद अगदा

लवा ॐ ऊँ ऊँ आ ॐ काले ना विदाले पान आ पाद अगदानद
 क ॐ ऊँ ऊँ आ ॐ मल्ल जादाले पाले आ पाद पूर्व दानवाम
 ॐ ऊँ ऊँ आ ॐ वागध जादानपाले आ पाद पूर्व दानवाम
 ॐ ऊँ ऊँ आ ॐ काले पान आ पाद ॐ ऊँ ऊँ आ ॐ
 वा ॐ ऊँ ऊँ आ ॐ मल्ल जादाले पान आ पाद ॐ ऊँ ऊँ आ ॐ
 दानद ॐ ऊँ ऊँ आ ॐ मल्ल जादाले पान आ पाद

किं हं हि जाय सथा जाग लिं गमय नमः वलिं वायु धाग
 पृष्ठं रुध जाकु ले भभ नाय गि धमा दप र्द गाये रु नीग कि व र्द नाये
 पवन रु य पा लाय पाव नि भकी रु हि गाये मा ने लिं गमय नमः
 वलिं कु र्द न यं न ले क्को व ने भभ नाय रु ग मि नि प र्द
 लाय क ले व को व ले कु य पा लाय को व दि भकि रु हि गा
 य वा नै द व लिं गमय नमः वलिं
 ॐ भभ न भव

हं नं कं हि ग ना भ भभ नाय भ नै प र्द गाय रु रु व को य रु ग ना
 ये कु र्द पा लाय रु ग नि भकि रु हि गाय रु रु व को य लिं गमय नमः
 वलिं कु र्द न यं न ले क्को व ने भभ नाय रु ग मि नि प र्द
 प र्द गाय क र्द रु व रु को य वि व रु कु र्द पा लाय नै रु भि भकि रु हि
 गा रु रु क लिं गमय नमः वलिं रु रु उं रुी प र्द
 व भ भभ नाय रु रु रु दि प र्द गाय प न म भि रु रु य पा लाय

ले श्री प्रदागा अंगग अदि वाक् उदि महापात्रपूजा
नामो दिगपूजा पर्व अंग उदि उपाव हि अ
नामरुद्रपर्वगाय नो उव क्राम नु रुद्रपा लोके नु
भक्तिरहि माय नये नवल्लिं गाय नमः वल्लि अंग
कस्य उध मा कले अना य म नो कपर्वगाय विक्तिनीह
क्राम अना क्रय पा लो य सा हा भक्तिरहि गाय नउ लि

गमय नमः वल्लि यम वे कं अका लद अ अ
नाय लोका लोक पर्व गाय नमो लोद क्राम यम वे कं उपा लो
य वे मा भक्तिरहि य अद्या नलिं गाय नमः वल्लि
नमः स रुद्र अ सि पत्र अना य नरुद्रपर्वगाय अगा
रुद्राय नो अमरुद्र उपा लो य नो रुद्रो भक्तिरहि गाय अदि
द्यो नलिं गमय नमः वल्लि गक्ति न अं अका न
गाय अना य गु पर्वगा य वे द अ क्रय पा लो य वा दे अ

इन्द्रे पास्नासाउमाध्वी। यामय६ शाह० धन॥ यावभुसोऽवद
क्र० याताध६ सऊनादिन॥ ॐ कृयासस्म० ध्वदी० जलिन० ध
तु० नव६॥ इ० न० इ० समारथागा० च० ग० कासप० सो० लो॥
उमप्र० सखवभु० सा० सखवभु० म० ग० द० दानो० न० क०
ना० ध० य० द० मा० नो० ना० स० ना० य० च॥ ज० न० क० ध० म० स० र० न० ज० य० ग० ड० व०
(अधने॥) अ० श० ज० धा० दि॥ वा० क० न० स० ह॥ ॐ नि० क० म० प० ज०॥

॥ ग० ना० म० हा० पा० न० प० ज०॥ अ० धा० ना० मु० न्या० स० के० य० र्ग०

आधन० भ० क० य० पा० इ० का० अ० न० ना० सा० य० पा० इ० का० के० ना० सा० य० इ०
ना० ना० सा० य० इ० य० ना० सा० य० इ० के० ना० सा० य० इ० के० ना० सा० य० इ०
प० ना० सा० य० पा० इ० का० न० का० ना० सा० य० पा० इ० का० धा० न० न० न० लो० का०
न० स० नि० ला० दि० वी० रु० वा० ज० ति० म० लो० जि० ना० यो० व० ना० न० न० न० पा० इ०
ति० न० ज० दि० दि० व० ने० पि० नी० म० दि० ना० न० न० व० न० न्या० द० धा० क० रु० इ०

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥

THE UNIVERSITY OF CHICAGO PRESS

1.259

ASHA ARCHIVES

For Asha Malls

1.259

ASHA ARCHIVES

ॐ गिष्मने ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ग्ल्भसहस्रपद्मदवीप्रसू
व स्रस्त्राहा ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ग्ल्भसहस्रपद्मदवीप्रसू
॥ वक्रन्यादि ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ग्ल्भसहस्रपद्मदवीप्रसू
मपिवलि ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ग्ल्भसहस्रपद्मदवीप्रसू
याज्ञाभ्वनी चन्द्रपीथयामका लिमानिनाही काली का
मन्त्रिनी सिद्ध कालि प्रसूतानी चन्द्र कालि ज्ञाने धनि

वन्दु कालि शक्ति यानि न क कालि सर्व समय लोके कने
सुसिद्ध प्रसून शीघ्र सन हे सखे रक्षा करी ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
ॐ वाहिनी कालि ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ग्ल्भसहस्रपद्मदवीप्रसू
ॐ ह्रीं श्रीं ग्ल्भसहस्रपद्मदवीप्रसू ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ग्ल्भसहस्रपद्मदवीप्रसू
वानिनी श्रीमहाविद्यानप्रेतयन ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ग्ल्भसहस्रपद्मदवीप्रसू
शानिनी नो ह्रीं अनेय ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ग्ल्भसहस्रपद्मदवीप्रसू

वलि आवाञ्च मन्त्रा गर्ङ्गना दन्तु गार्ङ्गा आनिमन्त्रोदधियग
विन्दुय

ॐ ईं सः सः सुय रुरु कनसाधन ॐ ईं सः कनिमन्त्र कायनम
ॐ लोदिकने अरु न्या सेकुनेधनं आसनः
ॐ ईं सः आधनधकनम ॐ ईं सः क्रोना भुवावायनमः
ॐ ईं सः अनन्मासायनमः ॐ ईं सः नागासायनमः

ॐ ईं सः सः पगासायनमः ॐ ईं सः कसगासायनमः ॐ
ईं सः कः कः कासगायनमः ॐ ईं सः पसायनमः
ॐ ईं सः रः कः सायनमः ॐ ईं सः ॥ आन ॥ ॐ ईं सः सुसः रिक
सकासः पिने अने नुमोनिने वनेदा एयहरेव ॥ मः
सासाधनरुने नवसासासः हः दवे सः हः कासः रुरुः
पुद ॥ ॐ पि आनपषनमः ॐ ईं सः मः एयः अयायः

दधनपदवसम सोपाके लो अदीया नो न कालिने नि य नि प न
प न ले श्री श्री ह विद्या न ले न स प द ह साध या नि स ह
कुं श्री ह कुं श्री ह ले व म प ह ह कुं ह नि अ ह काने स ना व हि
आ न ने व व क डि डि कालु अ वा के पा लि पा द पो य प के भ ह ह
अ न प न अ को ह वा य न अ स लि ले प नि दी न ले कुं
न सः सा ह । म व न ले प न द ह साध या नि स ह

कुं श्री ह कुं श्री ह अ अ १५ वा र व गं द हं ३ ग मि व भ की स दा लि
व भ व न सि व वि या मो या के लो अ वि या लो न कालि नो य नि प
न प ह ह नि अ ह काले म ना व हि अ न ले के व कुं डि कालु
अ वा द पा लि पा द वा य प के भ ह ह अ न प न स न भ अ क
भ वा य न अ स लि ले प नि वि न ले कुं कुं १७ स व न ले न
न डि व साध या नि स ह

अवतन २००० नमः स्माल पात कर्म अक पाति एव निः
मलेन कुं अ विध वय अने स म अ आवा म धने पाति भव
पवन ग कुं नी वि म न क न कि लि कुं म हा पाति कुं अ लि हा कुं
म हा अ लि हा व न र य म दा द भ य म म ले म कुं म पा तु म पा
य म म ले न वि म आ आ दि म व रु य प ज र ने सिः
के ये न ध न्या म नि क ले पा नि म दा द भ य म

ग दु ध न अ न्य पा व वि न्द द लो

म म न न म य नि

कुं कुं कुं ग गु र यो न म पू र या मि ग य पा मि न म वि म
कुं को गु र म कि पा न मः पू र या मि ग य पा मि न म वि म

म म न न म य नि

म म न न म य नि

कुं कुं नै क न न न म कुं कुं नै क न न म कुं कुं नै क न न म
कुं कुं नै क न न न म कुं कुं नै क न न म कुं कुं नै क न न म

नकुवन्दननेनपयग पागवि न्दु रि काभसधैरुखि विरुदि
खन उरु कुरु कुरु गदाधपवधपयग उरु नैरुं गिध
पनेधपयग उरु गीम क को ल्या को यपाग कोपेयाः
मिनन पाय कापने उरु को स यम लुलोयदादभाकला
सैनन पागसेम क कुरु न पाग पनेम न निरक
हे गय को उरु उ का लुदे पा दि सलम उरु सै गीरु

के का ल्या गी पाव पून या नि नम स रय मे गय उरुं
रु भौ मिरव दि पग मुद्रि गय उरुं सा सा नम मुना
म पा उ भा क ला ने न नम पा ग स म उरु
न पा उ य म धं य पाय पू म उरु न पा ग रा य पा
इ को पू उ या म न म क नि उरुं य न ग म य लिक
उरु म म न द य पा द उरुं म हा मे म य द

ॐ नि मरव पूजा

नगा आर्घ्य पूजा मूलमनुन

विष्णु षष्ठं नमः षड् अनादं धनं कानिमृदा
रामचरितं नमः रघुनाथं पश्चिमं नमः विष्णु लोकाया
कालिका कल्यो धनीका विपुनया मेलेन ननु अमरवदुष
ता कल्य
नगा दध अमरव
मेव चाग्रदध पूनम
नगा आर्घ्य पात्र पूजा

ॐ रुद्रं कापक नमः सोम नमः मेधुनं मेधुनं
पश्चिमं कल्यो नमः कुरु मेधुनं ॐ रुद्रं अमरवका
रूपं यामि नमः विपुनं दध पात्रं ॐ रुद्रं अमरवका
पदं धनं कल्यो नमः नमः विपुनं दध पात्रं ॐ रुद्रं अमरवका
कालं धनं नमः नमः विपुनं दध पात्रं ॐ रुद्रं अमरवका
कालं धनं नमः नमः विपुनं दध पात्रं ॐ रुद्रं अमरवका

[illegible][illegible]

गङ्गायाय श्री ३ स्वस्वतु दधगा प्रीत्यर्थं कामनार्थं सर्वदं करिष्ये ॥ ॐ
निर्मलकल्प ॥ ॥ उ न नो न ग न ॥ ॐ ॐ उपस न प न ॐ न ग ॐ
रत्ना तु वि स स्मिता ॥ ॐ गु ना वि द्य के को न स ग न स्य तु सि वा रु या
॥ द भा दि ग स हो न ॥ ॐ ॐ व गु रं ॐ स द धं ना न्न सु
य रु ट ॥ म ल अ रु न क ले ग न गु म ३ को दि को दि दि ग म
न क यो गे ॥ ॥ दि ग प र्जा ॥ ॐ ॐ ले ॐ नु दि द ध म्भो क

जा ला भा न म ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ का दि रे न मा य न म ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ या ग म दि
रु गु पा र्थे पा न म ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अ सि ना अ दि अ रु रु ने वा य न म ॥
ॐ ॐ अ क र ट ग प म ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ना दि अ रु मा रे क पा न म ॥
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ल क स रु व जा कि नि पा न म द भा दि ग स क म न ॥
॥ अ व क अ स न प र्जा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अ भा न धा कि क म न ला सा य न म
॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ मा रा य न म ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अ स म रु का ला सा य न

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

श्री काशी का चम इति

वि. वि.

1. 259

1. 259

1. 259